पाठ 17. शाप-मुक्ति

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह सीख देना है कि यदि उनसे कोई गलती या भूल हो जाए तो उन्हें उसके लिए अपने बड़ों से माफ़ी अवश्य माँगनी चाहिए क्योंकि माफ़ी से बड़ा पश्चाताप और कुछ नहीं होता। इस पाठ द्वारा बच्चे न केवल अपनी गलती स्वीकार करना सीख सकेंगे बल्कि उनके अंदर पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम भाव भी जाग्रत होगा।

पाठ का सारांश

लेखक अपनी दादी का इलाज कराने डॉ॰ प्रभात के पास पहुँचे तो वे उन्हें कुछ जाने-पहचाने से लगे। बातचीत करने पर पता चला कि वे उनके बचपन के दोस्त मंटू हैं। दादी को जब यह पता चला कि डॉ॰ प्रभात ही मंटू है तो उन्होंने इलाज कराने से मना कर दिया। दरअसल, मंटू ने बचपन में आक के पौधों का दूध निकालकर पिल्लों की आँखों में डाल दिया था, जिससे वे अंधे हो गए तथा इधर-उधर भटककर मर गए। बचपन में लेखक द्वारा यह बात बताने पर मंटू की पिटाई भी हुई थी। मंटू को इसका बहुत पश्चात्ताप हुआ। मंटू पढ़-लिखकर एक प्रसिद्ध नेत्र-चिकित्सक बन गया था। एक शाम डॉ॰ प्रभात लेखक के घर पहुँचे तथा दादी को अपने मन की बात समझाई। दादी ने स्नेहपूर्वक डॉ॰ प्रभात के सिर पर हाथ फेरा तथा इलाज कराने की हामी भर ली। अनजाने में यदि कोई पाप हो जाए तो उसका प्रायश्चित करके इनसान अपनी भूल सुधार सकता है।

अध्यापन संकेत

बच्चों से पाठ का एक-एक अनुच्छेद पढ़ने को कहें। उनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। पाठ के महत्वपूर्ण अंशों का भाव समझाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ❖ बच्चों से पूछें कि उनके घर-परिवार या आस-पड़ोस में रहने वाले बुज़ुर्गों का व्यवहार कैसा है?
- ❖ बच्चों से जानें कि क्या बचपन में उन्होंने कोई ऐसी गलती की है जिसका पश्चात्ताप उन्हें कई दिनों तक रहा।
- ❖ उन्हें बताएँ कि पशु-पक्षियों तथा जानवरों के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।